ISSN-2230-7540

"राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन"

Dr. Devorshi Kumar Shukla

Principle
Shri Vasudev Basic Teacher Training Institute
Morena, Madhya Pradesh

किसी भी राष्ट्र व समाज के विकास का महत्वपूर्ण साधन मानव है। षिक्षा ही मानव को समाज में स्थापित करती है। कोई भी राष्ट्र तब तक उन्नति नहीं कर सकता जब तक उस राष्ट्र के मानव को विकास का सुअवसर प्राप्त न हो जाय। मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा है। छात्रों के सर्वांगीण विकास का मुख्य श्रेय शिक्षक को ही है क्योंकि वह अपने निर्देषन में कुसमायोजित छात्र को समायोजित तथा षिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से छात्रों की पहचान कर, उत्तम षिक्षण विधि का प्रयोग कर छात्रों को स्वयं सुयोग्य, सक्षम प्राणी बनाने तथा राष्ट्र के कल्याण हेतु तैयार करता है।

एक योग्य षिक्षक भौतिक साधनों के अभाव में भी विद्यार्थियों को उत्तम षिक्षा प्रदान कर सकता है। षिक्षक के षिक्षण कार्य को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक शिक्षक की व्यवसायिक सन्तुष्टि है, क्योंकि यदि षिक्षक की व्यावसायिक सन्तुष्टि षिक्षण व्यवसाय में उच्च होगी, तभी षिक्षक प्रभावी शिक्षण कर सकता है। जिसके द्वारा षिक्षा में सकारात्मक विकास किया जा सकता है। परन्तु शैक्षिक प्रक्रिया के विकास के क्षेत्र में वर्तमान षिक्षक की स्थिति सर्वथा भिन्न है। वह निर्धनता, उपेक्षा, असुरक्षा तथा अनुषासनहीनता से पीड़ित है। अतः उसकी कार्य संलग्नता तथा रूचि में कमी है। फलतः व्यवसायिक सन्तुष्टि की अनुभूति भी निरन्तर कम होती जा रही है। षिक्षकों की इन समस्याओं का अध्ययन कर उसमें अपेक्षित सुधार आवष्यक है, ताकि वे अपने उत्तरदायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वाह कर सके और षिक्षा में परिवर्तन एवं परिमार्जन कर समाज एवं राष्ट्र को उन्नति के षिखर तक पहुॅचा सकें।

ISSN-2230-7540

भावी व वर्तमान शिक्षकों की गुणवत्ता में अभिवृद्धि के लिए उनकी व्यवसायिक सन्तुष्टि का होना आवष्यक है। प्रष्न यह है कि शिक्षक–व्यवसाय के प्रति असंतोष को उत्पन्न करने वाले कौन–कौन से प्रमुख कारण है। उपरोक्त विवरणों से प्रेरित होकर अध्ययनकर्ता के मन–मस्तिष्क में अकस्मात् यह प्रश्न उठा कि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों एवं शिक्षकों को प्रदान किया जाने वाला पारिश्रमिक भिन्न–भिन्न है तथा उनके प्रति समाज का दृष्टिकोण भी अलग है। क्या यह भिन्नता का प्रभाव उनकी व्यवसायिक संतुष्टि पर भी पड़ता है। इसके अतिरिक्त जहां राजकीय विद्यालयों में पूर्ण मानक के अनुरूप षिक्षकों का चयन आयोग के द्वारा किया जाता है वहीं पर गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में प्रबंधकीय व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षकों का चयन होता है जिसमें मानकों का पूरा ध्यान नहीं रखा जाता । इससे शिक्षकों की शिक्षा दक्षता प्रभावित होती है। माध्यमिक स्तर पर विभिन्न स्तर पर विभिन्न वर्गों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि को ज्ञात करने हेतु प्रस्तुत शोध प्रपत्र का निर्माण किया गया है जिसका शीर्षक है – ' राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के षिक्षकों के व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन' ।

अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध प्रपत्र हेतु निम्नलिखित उद्देष्यों का निर्माण किया गया है–

1. राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।
2. राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं का व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।
3. राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि में सह–सम्बंध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

1. राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं का व्यवसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं षिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सह–सम्बंध नहीं है।

शोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि पर आधारित है जिसमें वाराणसी जनपद के राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत षिक्षकों एवं षिक्षिकाओं को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। चयनित

ISSN-2230-7540

न्यादर्श के रूप में ज्ञानपुर तहसील के माध्यमिक विद्यालयों से 25 राजकीय एवं 25 गैर सहायता प्राप्त षिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्ष प्रतिचयन विधि से किया गया है। प्रदत्त संकलन हेतु डॉ. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित व्यावसायिक संतुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विष्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात तथा सह–संबंध गुणांक ज्ञात किया गया है।

प्रदत्तों की गणना :

सारणी – 1

राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का

सांख्यिकीय विश्लेषण

माध्यम	N	M	S.D.	D	σD	t	सार्थकता
राजकीय शिक्षक	25	203.78	14.78	9.9	2.40	4.12	.01*
गैर सहायता प्राप्त शिक्षक	25	193.40	14.02				

विश्लेषण :

उक्त सारणी संख्या–1 से स्पष्ट है कि राजकीय षिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के प्राप्तांकों का मध्यमान 203.78 है तथा मानक विचलन 14.78 है जबकि गैर सहायता प्राप्त षिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के प्राप्तांकों का मध्यमान 193.40 तथा मानक विचलन 14.02 है। परिगर्णित टी–अनुपात 4.12 है जो स्वतंत्रयांष (की) 48 के लिए सार्थकता स्तर .01 पर टी–सारणीमान 2.64 से अधिक है जो सार्थक है। चूंकि राजकीय षिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के प्राप्तांकों का मध्यमान 203.78 गैर सहायता प्राप्त षिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के प्राप्तांकों का मध्यमान 193.40 से अधिक है। अतः राजकीय षिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि गैर सहायता प्राप्त षिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि से अधिक है।

व्याख्या :

राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के षिक्षकों की व्यवहारिक संतुष्टि का उच्च होना उनके वेतनमान, व्यवसाय की सुरक्षा, दबाव की कमी एवं योग्यता का अधिक होना आदि है। जबकि गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत षिक्षकों की व्यावसायिक असुरक्षा, प्रबंधकीय दबाव, कार्य का अधिक बोझ एवं वेतनमान का संतोषजनक न होना आदि व्यावसायिक संतुष्टि की निम्न होने के संभावित कारण हो सकते हैं।

सारणी – 2

ISSN-2230-7540

राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि का सांख्यिकीय विश्लेषण

माध्यम	N	M	S.D.	D	σD	t	सार्थकता
राजकीय षिक्षिका	25	199.41	14.24	0.51	2.38	0.21	.01*
गैर सहायता प्राप्त षिक्षिका	25	199.91	14.20				

विष्लेषण :

उक्त सारणी संख्या–2 से स्पष्ट है कि राजकीय माध्यमिक विद्यालयों की षिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि के प्राप्तांकों का मध्यमान 199.91 है तथा मानक विचलन 14.24 है जबकि गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की षिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि के प्राप्तांकों का मध्यमान 199.41 तथा मानक विचलन 14.20 है। परिगणित टी–अनुपात 0.21 है जो स्वतन्त्रयांष (कि) 48 के लिए सार्थकता स्तर .01 पर टी–सारणीयन 2.64 से बहुत कम है जो असार्थक है। चूंकि राजकीय माध्यमिक विद्यालयों की षिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि के प्राप्तांकों का मध्यमान 199.21 गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की षिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि के प्राप्तांकों का मध्यमान 199.41 से अधिक है। अतः राजकीय माध्यमिक विद्यालयों की षिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की षिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि से अधिक है। किन्तु सार्थकता स्तर पर यह मान नगण्य है, अर्थात राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की षिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि समान है।

व्याख्या :

राजकीय माध्यमिक विद्यालयों की षिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की षिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि की समानता का सम्भावित कारण दोनों की शैक्षिक योग्यताओं में समानता उनकी संबंधित व्यवसाय में सुरक्षा का दृष्टिकोण तथा शैक्षिक अभिरूचि आदि हो सकते हैं।

सारणी – 3

राजकीय एवं गैर सहायता प्राप्त शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि में सह–संबंध का सांख्यिकीय विश्लेषण

माध्यम	N	M	S.D.	सार्थकता
राजकीय शिक्षक एवं शिक्षिका	100	198.59	28.18	.21
गैर सहायता प्राप्त शिक्षक एवं शिक्षिका		199.66	28.60	

ISSN-2230-7540

विष्लेषण :

उक्त सारणी संख्या–3 से स्पष्ट है कि राजकीय माध्यमिक विद्यालयों की षिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि प्राप्तांकों का मध्यमान 198.59 तथा मानक विचलन 28.18 है जबकि गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि प्राप्तांकों का मध्यमान 199.66 तथा मानक विचलन 28.60 है। परिगणित सह–संबंध गुणांक .21 है जो निम्न धनात्मक सह–संबंध गुणांक की श्रेणी में आता है।

व्याख्या :

उक्त सारणी के विष्लेषण से स्पष्ट है कि राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के षिक्षकों एवं षिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि तथा गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के षिक्षकों एवं षिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि धनात्मक रूप से अन्तरसंबंधित है। अर्थात राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के षिक्षकों एवं षिक्षिकाओं तथा गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के षिक्षकों एवं षिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि में धनात्मक सह–संबंध है। इसका सम्भावित कारण व्यवसायगत गुण एवं षिक्षकों में इसके समान दृष्टिकोण हो सकते हैं।

1. सारस्वत, मालती : शिक्षा मनोविज्ञान, लखनऊ, आलोक प्रकाश–2004
2. गुप्ता, एस0पी0 : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन–2004
3. गैरेट, हेनरी : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, बाम्बे, वैकलिस फेफर एण्ड सिमन्स प्रा0 लि0, 1967
4. उपाध्याय, प्रतिभा : भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृतियां, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन–2005
5. गुप्ता, एस.पी. : जाब सैटिसफैक्षन एण्ड द टीचर, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन–2007
6. सिंह, अरूण कुमार : उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पटना प्रकाशन, 2004